शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
निबंध माला, शीर्षक - 'गाँधीजी और मैं'
लेखक - पंडित रामनन्दन मिश्र

प्रश्न :- 'गाँधीजी और मैं' निबंध के महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करें।

उत्तर :- 'गाँधीजी और मैं' पंडित रामनन्दन मिश्र का एक संस्मरणात्मक निबन्ध है। इस निबन्ध में लेखक ने अपने संघर्ष और गाँधीजी के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्धों को अपने संस्मरण में उल्लेख किया है।

सन् 1926 में महिला सभा को सम्बोधित करने के लिए बापू दरभंगा गये थे। उस सभा में गाँधीजी और महिलाओं के बीच एक पर्दा डाला गया था। गाँधीजी इस पर्दा प्रथा के विरोध में अपने एक पत्र में कड़ी टिप्पणी की थी।

कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर रामनन्दनजी घर आये तो उनके मन में पर्दा प्रथा के विरोध की बात जोर-शोर से उठायी। उन्होंने कुछ नौजवानों को इकट्ठा किया और इस प्रथा का किस तरह विरोध किया जाए इस पर विचार विमर्श हुआ। इस प्रथा का विरोध करने के लिए रामनन्दन बाबू ने स्वयं बीड़ा उठाया। परिणामस्वरूप उनका अपने परिवार में ही विरोध होने लगा। उनके पूज्य पिता सहित परिवार का कोई भी व्यक्ति इस बात के लिए तैयार नहीं था कि रामनन्दन जी की पत्नी घर से बाहर निकले। बहुत दिनों तक घरवालों का डराने-धमकाने का काम होता रहा परन्तु लेखक के ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। गाँधी जी को भी इसमें बीच-बचाव करना पड़ा। उन्होंने रामनन्दन जी की पत्नी को पढ़ाने के लिए राधा बाई तथा दुर्गाबाई को उनके घर पर भेज दिया। गाँधी जी ने रामनन्दन जी को लिखा पत्नी राजकिशोरी को साबरमती भेज दो।

लेखक का अपने परिवार वालों से घोर संग्राम छिड़ गया। मिश्रजी ने अपने पिताजी को कई पत्र भी लिखे, परन्तु कहीं से कोई बात नहीं बनी।

शेष आगे -

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०–पत्र

जयद्रथ-वध — काव्य खण्ड

कवि – श्री मैथिलीशरण गुप्त

कर पार गिरि-वन-नद यदपि कैलाश को हम जा रहे।
पर दृश्य आगे के स्वयं मानो निकट सब आ रहे।
गोविन्द! पीछे तो अहो! देखो तनिक दृग फेर के,
तम कर रहा है लीन-सा क्रम से जगत को घेर के॥

भावार्थ– प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कह रहे हैं कि अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ कैलाश पर्वत पर जा रहे हैं और वहाँ की शोभा का वर्णन कर रहे हैं। अर्जुन कैलाश पर्वत के मार्ग के सुन्दरता का वर्णन कर रहे हैं। वे कह रहे हैं हे गोविन्द हम लोग पर्वत, वन और नदियों को पार करते हुए यद्यपि कैलाश पर्वत की ओर जा रहे हैं, परन्तु हमको ऐसा लग रहा है मानो आगे के सभी दृश्य स्वयं ही हमारे निकट आते चले जा रहे हों। हे भगवान आप भी तो अपनी आँखें फेर कर देखो कि अंधकार बारी-बारी से सारे संसार को घेर-घेर कर अपने में लीन करता जा रहा है।

इस पद्यांश के द्वारा कवि मैथिलीशरण-गुप्त अर्जुन के साथ गोविन्द के कैलाश पर्वत पर जाने के क्रम में अर्जुन के मन में उठने वाले प्रश्नों का मार्मिक चित्रण किये हैं। मार्ग में जो दृश्य उपस्थित हुआ है उसे अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण को सहज रूप में बता रहे हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०क० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
13|04|20

Date: ________ Page: ______

अपने आप बात करने की शक्ति पैदा करना सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत है।

वाक्शक्ति को दमन करने से अनेकों प्रकार का दमन हो जाता है। ऐसा नहीं होने पर जिह्वारूपी कतरनी क्रोधाग्नि को भड़काकर अजेय को भी अपने आगोश में समेट लेती है। निष्कर्षतः मौन की साधना का साधक बनकर अपने आप से बातचीत करना सभी साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मन्दिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
13/08/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
दिगंत- भाग- 2- गद्य खण्ड Date _____ Page _____

शीर्षक - 'बातचीत'
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

प्रश्न:- 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश लिखें।
उत्तर:- 'बातचीत' शीर्षक ललित निबंध महान निबंधकार और आलोचक बालकृष्ण भट्ट की रचना है। यह निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंध कला के साथ-साथ भाषा-शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है।

ईश्वर द्वारा प्रदत्त, शक्तियों में वाक्शक्ति मनुष्य के लिए वरदान है। बातचीत में वक्ता को नाज-नखरा का मौका नहीं मिलता परन्तु वक्तृता में चुटीली बात वक्ता को लाना पड़ता है, जिससे करतल ध्वनि अवश्य हो। बातचीत, जहाँ दो आदमी का प्रेमपूर्वक संलाप है, वहीं स्पीच का उद्देश्य श्रोता में जोश पैदा करना होता है।

जिन्दगी को मजेदार बनाने के लिए ~~बात~~ बातचीत सारगर्भित तत्व है। बातचीत से चित्त हल्का और स्वच्छ होता है। उसे लेखक ने राम-रसौवल की संज्ञा दी है। रॉबिंसन क्रूसो 16 वर्ष कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बीच रहने के उपरांत फ्राइडे के मुख से मनुष्य की बोली सुनकर आनन्द विभोर हो गया। मनुष्य का गुण-दोष प्रकट करने के लिए बातचीत आवश्यक है। बेन-जानसन के अनुसार " बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, जो सर्वथा उचित है।" एडीसन के अनुसार- "असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी एक-दूसरे के सामने अपना दिल खोलते हैं। तीसरे की उपस्थिति मात्र से ही बातचीत की धारा बदल जाती है।" बातचीत में जब चार व्यक्ति लग जाते हैं तो बातचीत का कोई औचित्य नहीं रह जाता है।

बातचीत के लिए दो पक्षों की उपस्थिति लाजिमी है। बातचीत होने के लिए एक-दूसरे के पास आने-जाने में शिष्टाचार की त्रुटि हो सकती है। लेखक के अनुसार

शेष आगे-

Date: _____ Page: _____

पंडित रामनन्दन मिश्र ने गाँधीजी संबंधित कई संस्मरणों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं- गाँधीजी अक्सर रेल के तीसरे डब्बे में यात्रा करते थे। मैं उनके साथ रहता था। गाँधीजी के लिए एक डिब्बा रिजर्व होता था। हर स्टेशन पर चन्दा की वसूली होती थी।

लेखक का कहना है कि वे राह अलग हो जाने के बाद यदि कोई दूसरा होता तो बोलता तक नहीं, किन्तु बापू में कैसी समानता थी कि उन्होंने अभी तक अपनापन नहीं छोड़ा। इसी प्रकार बहुत सारी यादें हमारी उनके साथ जुड़ी हुई हैं। सच्चे अर्थों में गाँधीजी देश के लाखों-करोड़ो जन के प्रिय थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
18/08/20